Govt. Degree college Bhojpur Moradabad

Name — Madhu Tyagi

Email — madhutyagi881@gmail.com

Stream — Arts

Name of course — B.A II

Name of Sub — History

Name of Topic — Akbar

Name of Sub-Topic — Religious Policy

Meta-data Keywords — Akbar Religious Policy.

Type — Pdf Text

Scanned with CamScanner

अकबर की धार्मिक नीति →

अकबर की धार्मिक नीति की व्याख्या करते हुए उसके प्रेरक कारक के रूप मे दो तथ्यों पर विचार करना आपेक्षित करना प्रथम उदार धार्मिक नीति की वह विरासत जो अकबर को प्राप्त हुई। दूसरे तात्कालिक और आवश्यकता और अकबर की बाध्यता

⇒ उदार विरासत

⇒ मंगोल मुगल परम्परा उसकी धार्मिक नीति पक्ष से प्रभावित थी - - -

⇒ दूसरी तरफ मुगलों के प्रति उदार धार्मिक परम्परा रही थी उदाहरण के लिए बाबर के विषय मे यह कहा जाता है कि जब वह मध्य एशिया मे था तब भी वह शिया कुल्लाह धारण करता था। फिर हुमॉयु भी धार्मिक मामलों मे उदार था। फिर स्वयं उसके भाई कामरान ने उसकी धार्मिक उदारता की आलोचना की थी।

⇒ अकबर अपने गुरु अब्दुल लतीफ, माता हमीदा बानो बेगम के व्यक्तित्व से भी प्रभावित था।

⇒ भक्ति एवं सूफी विचारधारा पर भी अकबर पर प्रभाव पड़ा।

⇒ अलाउद्दीन खिलजी व M.B.T शासकों की उदार धार्मिक नीति का प्रभाव

राजनीतिक आवश्यकता और बाध्यता → अकबर की धार्मिक उदारता तत्कालीन आवश्यकता से प्रेरित थी। वह एक संयुक्त अमीर वर्ग का निर्माण करना चाहता था। और इस अमीर वर्ग मे हिंदु अमीर वर्ग को भी शामिल किया जाता था। 1556 - 1573 इस चरण मे हम देखते है कि अकबर अपनी व्यक्तिगत आस्था मे एक कट्टरवादी सुन्नी मुसलमान था। फिर भी उसने राजनीतिक रूप मे उदार धार्मिक नीति अपनायी।

Scanned with CamScanner

दूसरे शब्दों मे यह वही काल जब अकबर व्यक्तिगत स्तर पर शेख अब्दुल नबी एवम मुहम्मद सुल्तानपुरी जैसे कट्टर उलेमाओं के प्रभाव मे रहा था। किन्तु फिर यह वही काल है जब उसने कुछ उदार कदम उठाये उदाहरण के लिए 1562 मे उसने युद्ध बन्दियों को जबरन दास बनाने पर पाबन्दी लगायी तो 1563 मे तीर्थयात्रा कर को समाप्त कर दिया और फिर 1564 मे हिन्दुओं की धार्मिक अपंगता को दूर करने के लिए धार्मिक अपंगता को हटा दिया।

दूसरा चरण 1573 1579— इस चरण मे अकबर का आकर्षण रहस्यवादी विचारों की ओर बढ़ता गया यही काल है जब अकबर ने प्रारम्भ मे इस्लाम धर्म के मर्म को समझने के लिए 1575 मे फतेहपुर सीकरी मे इबादतखाने का निर्माण कराया। और फिर अकबर ने इस इबादतखाने को कुछ समय के पश्चात अन्य पंथो के लिए खोल दिया क्योंकि अकबर अब यह समझने लगा था कि सच्चाई के अंश प्रत्येक धर्म मे है, जबकि अकबर का धर्म अपरम्परागत नही था। क्योंकि उससे बहुत पहले उम्मैया वंश के शासकों ने भी इस्लाम धर्म के मर्म को समझने के लिए इस प्रकार की धार्मिक सभा आयोजन किया था। फिर भी अकबर का यह कदम इस मामले मे विशिष्ट है कि उसके द्वारा आयोजित धार्मिक सभा मे न केवल मुस्लिम चिंतक तथा हिन्दु एवम जैन आचार्य शामिल हुए, वरन इस सभा मे ईसाईयों और पारसियों को भी आमंत्रित किया गया। इस प्रकार शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन से 300 वर्ष पूर्व ही अकबर ने सफलतापूर्वक एक धार्मिक आन्दोलन का आयोजन किया, आगे अकबर के द्वारा दिए गए इबादतखाने के प्रयोग से उसे दो प्रकार के लाभ मिले प्रथम वह विभिन्न पंथों के मर्म को समझ सका। इस प्रकार उसकी भावी धार्मिक नीति

के विकास मे अहम भूमिका रही। इससे वह उलेमा वर्ग की धार्मिक कट्टरता को समझ सका। और फिर उससे आगे निकल सका।

1579 मे अकबर ने दो महत्वपूर्ण कदम उठाये उसके ये कदम उस की धार्मिक नीति के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है विवादपस्द उसने जून 1579 मे उलेमा के नाम पर स्वयं अपने नाम का खुतबा पढ़ा। इसी इसका प्रतीकात्मक अर्थ था अब वह राजतन्त्र की शक्ति के विकास मे उलेमा की भूमिका को दरकिनार करना चाहता था। फिर उसने सितम्बर 1579 मे महजरनामा की उद्घोषणा की महजरनामा के स्वरूप को लेकर एकाधिक प्रकार के विचार देखने को मिलते है- उदाहरण के लिए एक दृष्टि से इसकी तुलना ब्रिटिश राजा जान से स्वीकृत मैग्नाकार्टा से की गयी। बताया गया है जिस प्रकार कुलीनों ने मैग्नाकार्टा को हस्ताक्षरित कर किंग को प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उसी प्रकार हस्ताक्षरित कर बादशाह को प्रस्तुत किया। फिर भी दोनों मे महत्वपूर्ण अन्तर यह था, जहाँ मैग्नाकार्टा किंग जान की शक्ति को कम कर रहा था वहीं महजर नामा बादशाह की शक्ति को बढ़ा रहा था। फिर एक ब्रिटिश लेखक स्मिथ ने महजर नामा को अमोघत्व का आदेश घोषित किया। और यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि इसके माध्यम से अकबर ने बादशाहत और पैगम्बरी को किन्तु इस सन्दर्भ मे किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचने से पूर्व महजर नामा के स्वरूप को स्पष्ट करना आवश्यक है, जिसमे इस तरह का प्रावधान था कि किसी महत्व प्रश्न पर विभिन्न उलेमाओं के दृष्टिकोण मे मतभेद हो तो अकबर इंसान ए कामिल होने के नाते उन विचारों मे किसी एक को चुन सकता है. और इसके अतिरिक्त अगर वह राज्यहित मे उचित समझे तो किसी नये आदेश को भी जारी कर सकता था। गौर से देखने पर पता चलता है कि अकबर ने इंसान-ए-कामिल की उपाधि अवश्य ली किन्तु उसने पैगम्बरी का दावा नहीं किया, मूलत: उसने मुख्य उलेमा के

बीच बादशाह को व्याख्यित करने की अन्तिम शक्ति प्रदान की। विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि अकबर का यह कदम किसी धार्मिक महत्वाकांक्षा से नहीं अपितु राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित था। वह उद्देश्य था प्रजा और राज्यों के सम्बन्धों को उलेमाओं के नियन्त्रण को प्रजा से अलग कर गैर धार्मिक नेतृत्व के नियन्त्रण मे लाना। फिर अकबर मध्यकालीन भारत के इतिहास मे धार्मिक नेतृत्व को राजनीतिक नेतृत्व के अधीन लाने वाला पहला शासक नही था। इससे बहुत पहले अला उद्दीन खिलजी ने ही इस तथ्य को स्पष्ट कर दिया था जब उसने काजी मुगुसुद्दीन वार्ता मे यह घोषित किया कि ~~वह~~ यह मैं यह नही जानता कि क्या धर्म संगत है और क्या नही है, मै वही करता हूँ जो राज्य के हित मे है। इसके अतिरिक्त अकबर के मह जर नामा का अन्तराष्ट्रीय परिपेक्ष्य महत्व था, उदाहरण के लिए महजर नामा के माध्यम से अकबर ने यूरोप के आयोजन के सहस से ईरान के शाह के साथ समानता का स्तर प्राप्त करना चाह

अन्तिम चरण:- इस चरण मे अकबर की धार्मिक नीति का आधार उसके पिछले 20 वर्षों के अनुभव उसके विरुद्ध होने वाले विद्रोह ने तैयार कर दिया वस्तुतः महजर नामा के माध्यम से अकबर ने इस्लाम धर्म के अंतर्गत ही स्वीच्छिक स्थिति को सुरक्षित करना चाहा। किन्तु 1579-80 ई० मे उसके विरुद्ध होने वाले विद्रोह ने यह सिद्ध कर दिया कि अकबर की यह नीति अधिक सफल नही रही। अब अकबर इस्लाम धर्म की परिधि से बाहर निकल गया। अकबर के द्वारा दीन ए इलाही की घोषणा को इस सन्दर्भ मे भी समझा जा सकता है, दीन-ए-इलाही को नया धर्म नहीं था इसमे न कोई संगठित धर्म था न कोई आधारभूत ग्रन्थ, वस्तुतः अकबर ने दीन-ए-इलाही मे कुछ नैतिक मूल्यों पर बल दिया गया

पेशों से सम्बन्धित थी। अबुल फजल दीन-ए-इलाही का चित्रण करता है, और उसके 12 सिद्धान्तों की चर्चा करता है, वह भी यह भी संकेत करता है कि बादशाह अपनी प्रजा के आध्यात्मिक नेतृत्व के साथ राजनीतिक नेतृत्व के लिए भी तैयार था दीन-इलाही की पद्धति अत्यधिक सरल थी, इस पद्धति के साथ इच्छाईया बादशाह के समक्ष सिज्दा व पायबोस करता था, बादशाह उसे अपने हाथों के सहारे खड़ा करता था और झुककर उसके कान में शास्त्र देता था अर्थात उसके कान में अल्लाह-हो अकबर की ध्वनि दी जाती थी फिर ईच्छाईया से ~~अपेक्षा~~ अपेक्षा की जाती थी कि वह माँस ~~भक्षण~~ से परहेज करे फिर वह अपने जीवनकाल में शराद कर्म करके लोगों को दावत दे सकता था, क्योंकि मृत्यु अब उसके लिए मुक्ति थी। इस प्रकार हम देखते है कि दीन-ए-इलाही मानवीय व्यवहार सामाजिक सम्बन्धों की एक पद्धति थी कोई पृथक धर्म नही था।

परन्तु ब्रिटिश विद्वान स्मिथ ने दीन-ए-इलाही को अकबर की मुर्खता का प्रतीक बताया है। विश्लेषण करने पर ऐसा ज्ञात होता है कि स्मिथ ने अपने अध्ययन में बदायूँनी एवम कुछ ईसाई ~~स्वार्थी~~ लेखकों के ~~अध्यय~~ विवरण को आधार बनाया, फिर ऐसा अनुमान भी किया जा सकता है कि मुस्लिम साम्प्रदायवादी एवम ईसाईवादी ~~इस्लामवादी~~ दोनों अकबर ~~की~~ की इस नीति के विरुद्ध हो गये। बदायूँ कहता है कि अकबर का दीमाक फिर गया था उसने इस्लाम विरुद्ध नीति अपना ली, दूसरी तरफ ईसाई चिन्तक भी इस बात से चिन्तित थी कि अकबर उनके धर्म के प्रति आकर्षित नहीं हुआ स्मिथ के अध्ययन पर आधारित विवरण पूर्वाग्रहस्त था। फिर यह भी सही है कि दीन-ए-इलाही को विशेष स्वीकृति प्राप्त नही हुई- स्वयं अबुल फजल ईबादियों के रूप में 18 अमीरों का विवरण देता है, जिसमे एक मात्र अमीर राजा बीरबल है सबसे बढ़कर राजपूत समर्थ भगवान

और मानसिंह ने भी इस धर्म को स्वीकार करने मे रुचि नही दिखाई। फिर स्वयं अकबर भी अशोक की तरह दीन-ए-इलाही की तरह उत्सुक और आतुर नही था। फिर यह भी एक तथ्य है, कि उसकी दीन-ए-इलाही पद्धति का फायदा उठाकर ~~एक~~ कुछ चापलूस अमीरो ने अकबर की निकटता प्राप्त करने की कोशिश की।
फिर भी इतने से दीन-ए-इलाही का महत्व कम नही हो जाता, वस्तुत: इसका मूल्यांकन महत्व इसलिए नही किया जा सकता कि इसे किस हद तक स्वीकृति मिली या इसे मानने वाले की स्वीकृति मिली, वरन इसका महत्व इस बात मे है कि इसके माध्यम से अकबर ने राजतंत्र और अमीरों के बीच सम्बन्धों के बीच एक नया आधार खोजा वस्तुत अकबर ने क्षेत्र नस्ल, धर्म सम्प्रदाय के आधार पर विभाजित अमीरों को कुछ खास कार्यक्रमों पर जोड़ने का प्रयास किया, एक दृष्टि से दीन-ए-इलाही अकबर द्वारा अपनाया गया एक राजनीतिक उपक्रम था इसके माध्यम से अकबर मे व्यक्तिगत वफादारी को बादशाहत से प्रत्यक्ष रूप मे जोड़ना चाहा किन्तु इस तथ्य को न तो मुस्लिम साम्प्रदायिक लेखक समझ सके और ना ही ब्रिटिश लेखक समझ सके।

अकबर की धार्मिक नीति

अकबर की धार्मिक नीति के तत्व

परम्परागत विरासत
(1) मुगल मंगोल परम्परा
(2) अकबर पर उसकी माँ हमीदा बानू व गुरु का प्रभाव
(3) पूर्व तुर्क शासकों का उदार दृष्टिकोण
(4) सूफी व भक्ति आन्दोलन का प्रभाव

तात्कालीन परिस्थितियाँ
(1) राजनीतिक आवश्यकता की बाध्यता
(2) अखिल ~~भारतीय~~ साम्राज्य स्थापित करना
(3) साम्राज्य को आन्तरिक तौर पर सुदृढ़ता देने के लिए सामाजिक समन्वय का विकास

अकबर के स्वयं के अध्ययन ~~की~~ संगोष्ठियों से प्राप्त व्यावहारिक ज्ञान

तीन चरण

1556-1573
- व्यक्तिगत तौर पर रूढ़िवादी लेकिन राजनीतिक तौर पर उदार नीति

1573-1579
अकबर रहस्यवाद की और उन्मुख

1574-84
इस्लाम के दायरे से बाहर निकल व्यवहारिक दृष्टिकोण का विकास

परिणाम
राजनीतिक सामाजिक मामलों में संस्कृति को प्रोत्साहन मामलों को प्रतिसंतुलित धार्मिक कट्टरता को नियंत्रित किया

Scanned with CamScanner